Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

हिमाचल में 'बसंत पंचमी' का सांगीतिक एवं लोक तात्विक रूप

DR. KIRTI GARG

Assistant Professor, Department of Performing Arts, H.P. University, Shimla

सार संक्षेपिका

'बसंत पंचमी' अर्थात् बसंत ऋतु की पाँचवीं तिथि। ये वह शब्द या उत्सव है जिससे सम्पूर्ण भारत परिचित है और हो भी क्यूँ न, सब इस दिन को 'सरस्वती पूजन' या 'विद्या की देवी' के पूजन के रूप में जानते हैं और मनाते आ रहे हैं। देखा जाए तो नए साल के आगमन में आने वाला यह दूसरा प्रमुख त्यौहार माना जाता है। पीढ़ियों से बसंत पंचमी का त्यौहार पूरे भारतवर्ष में बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पावन दिन संगीत से जुड़े लोगों के लिए तो एक महत्वपूर्ण दिन होता ही है साथ ही षिक्षा आरम्भ तथा षुभ कार्यों के आरम्भ का भी एक पावन दिन माना जाता है।

मूल शब्द: बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, मान्यताएं, सांगीतिक पक्ष, लोकतात्विक पक्ष।

भूमिका

बसंत पंचमी को 'बसंत उत्सव' के रूप में भी मनाया जाता है जिसका आरम्भ माघ महीने के षुक्ल पक्ष की पंचमी अर्थात् बसंत पंचमी से हो जाता है। इस उत्सव को मदनोत्सव कह कर भी पुकारा जाता है जिसके अन्तर्गत् भगवान श्री कृश्ण और कामदेव इस उत्सव के पूजित देवता माने जाते हैं। बसंत पंचमी को नई ऋतु के आगमन का सूचक भी माना जाता है। इस दिन को सम्पूर्ण भारत में विद्या की देवी सरस्वती माँ के पूजन का दिन माना जाता है। इस दिन सरस्वती पूजन की यह मान्यता है कि जब भगवान ब्रह्मा ने सृश्टि की रचना की तब हर ओर षान्ती व्याप्त थी, कहीं कोई ध्वनि सुनाई नहीं दे रही थी, तब भगवान विश्णु की आज्ञा से ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल से धरती पर जल छिड़का फिर नारी रूप में एक शक्ति अवतरित हुई जिसकी चतुर्भुजाएं थीं, जिसके एक हाथ में वीणा, एक हाथ में पुस्तक, एक हाथ में माला थी। तब ब्रह्मा जी के कहने पर माँ शक्ति ने वीणा बजाई जिसके साथ ही हर ओर संसार में ध्वनि व्याप्त हो गई ओर जो सृश्टि में शान्ती छाई थी वह दूर हुई। तब ब्रह्मा जी ने देवी को सरस्वती कह कर पुकारा। कहा जाता है कि उसी दिन से माँ सरस्वती को विद्या और संगीत की देवी के रूप में पूजा जाने लगा। इसी वजह से बसंत पंचमी के दिन संगीत कला और अन्य कलाओं से जुड़े लोग आराध्य देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना करते हैं।

शोध का क्षेत्र: इस शोध पत्र को लिखने के लिए हिमाचल के केवल कुल्लू क्षेत्र और षिमला के निचले क्षेत्र को लिया गया है।

शोध विधि: इस शोध पत्र को लिखने में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी उपलब्ध की गई है।

उपकरण: शोध सामग्री प्राप्त करने के लिए प्रष्नावली का तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों का प्रयोग किया गया है।

शोध की सम्भावना: इस विषय पर शोध करने के लिए एक बहुत ही बड़ा क्षेत्र हमें उपलब्ध है क्योंकि इस विषय से सम्बन्धित पहलुओं को लेकर पूरे हिमाचल प्रदेश पर तो शोध किया ही जा सकता है साथ ही पूरे भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर भी इस विषय को लेकर विस्तृत शोधकार्य किया जा सकता है, जिससे कि इस विषय से जुड़ी कई तरह की जानकारियां हमें उपलब्ध हो सकती हैं जो कि आज हमें लिखित रूप में उपलब्ध नहीं होती।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

शास्त्रों और ग्रन्थों में बसंत पंचमी की व्याख्या

'कामशास्त्र' में, 'सुवसंतक' नामक उत्सव का वर्णन आता है। इस उत्सव के विषय में 'सरस्वती कण्ठाभरण' ग्रन्थ में लिखा गया है कि सुवसंतक - (वसंतावतार) अर्थात् जिस दिन वसंत या बसंत पृथ्वी पर अवतरित हुआ, के दिन को कहते हैं। इसी प्रकार 'हरि भक्त विलास' और 'मातस्य सुक्त' ग्रन्थों में भी इस दिन को बसंत का उदय दिवस कहा गया है।

प्राचीनकाल में बसंत उत्सव

आज भी बसंत पंचमी को देश के विभिन्न भागों में वसंतोत्सव के रूप में मनाया जाता है लेकिन यदि हम प्राचीन समय पर दृष्टि डालें तो अनेक पुस्तकों और ग्रन्थों में यह वर्णन मिलता है कि बसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजन तो किया ही जाता है साथ ही पहली बार इसी दिन गुलाल उड़ाया जाता है, जो कि खुशी का प्रतीक माना जाता है। तत्तपष्चात् चैत्र कृष्ण पंचमी को वसंतोत्सव का अन्तिम दिन रंग खेल कर 'रंग पंचमी' के रूप में मनाया जाता रहा है। कहा जाता है कि राजा हर्षवर्धन के बाद तक अर्थात् सातवीं-आठवीं शताब्दी तक वसंतोत्सव मनाए जाने के प्रमाण मिलते हैं। ये भी कहा जाता है कि इस प्राचीन वसंतोत्सव में बसंत ऋतु के दिनों में एक महीने तक उत्सव मनाया जाता था जो कि बसन्त पंचमी से प्रारम्भ होता था। इस उत्सव की विषेशता यह थी कि गायन, वादन और नृत्य के साथ-साथ इस उत्सव में विवाह योग्य युवक-युवतियाँ अपनी इच्छा से अपना जीवन साथी चुनते थे और इस प्रकार किए गए उनके विवाह को समाज में पूरी मान्यता दी जाती थी।

बसंत पंचमी एवं संगीत कला

बसंत पंचमी को एक विषेश दिन के रूप में जाना जाता है, या यूँ कहें कि इस दिन का हमारे जीवन तथा कला क्षेत्र में विषेश महत्व है। इस दिन से वसंत ऋतु का आगमन होता है। फाल्गुन और चैत्र मास इस ऋतु के माने जाते हैं। कहा जाता है कि इस दिन से शरद ऋतु की सर्दी कम होने लगती है। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल ही फूल, वृक्षों की टहनियों में हरे नए पत्तों की कोंपलें, आम के पेड़ों में बौरों का आ जाना, चारों ओर खेतों में सरसों के पीले फूल, बागीचों में रंग-बिरंगे फूलों की बिछी चादरें, कोयल की कूक, अन्य पक्षियों का चहचहाना - एक बहुत ही सुन्दर वातावरण चारों ओर दिखाई देता है और इस वातावरण में राग और रंग जब मिश्रित हो जाता है तो यह बसंत पंचमी का दिन और भी मनमोहक हो जाता है। बसंत पंचमी के दिन पहला गुलाल तो उड़ाया ही जाता है साथ ही इसी दिन से होरी और धमार का गान प्रारम्भ हो जाता है। संगीत से जुड़े लोगों के लिए तो यह दिन बहुत ही विषेश होता है। आज के दिन कलाकार लोग पीले वस्त्र धारण कर माँ सरस्वती की पूजा करते हैं और इस पूजा में वे अपने गायन, वादन और नृत्य रूपी फूल अर्पित करते हैं। इस दिन कुछ रागों का भी विषेश महत्व रहता है जैसे -- बसंत-बहार, काफी इत्यादि राग।

बसंत पंचमी एवं उससे जुड़ी मान्यताएं

जैसा कि ज्ञात है कि इस दिन लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं। इस दिन पीले रंग का भी बहुत महत्व माना जाता है क्योंकि पीला रंग प्रकाश, उर्जा, समृद्धि और शुभ आर्षीवाद का प्रतीक माना जाता है। इसी लिए इस दिन पीले वस्त्र और पीले फूलों तथा पीले रंग के व्यंजनों का प्रयोग किया जाता है।

माँ सरस्वती को ज्ञान, विज्ञान, संगीत और अन्य सभी कलाओं की देवी माना जाता है। अतः बसंत पंचमी के दिन विद्यारम्भ और अक्षराभ्यास के लिए शुभ माना जाता है। इसलिए बहुत से माँ-बाप आज के दिन अपने बच्चों की विद्या का आरम्भ करवाते हैं।

एक मान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि बसंत पंचमी के दिन साँपों को दूध पिलाया जाता है, यह माना जाता है कि ऐसा करने से धन और समृद्धि का आगमन होता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

भारत के कई क्षेत्रों में विषेशकर पंजाब में इस दिन पतंग उड़ाने का खेल खेला जाता है जो कि एक पारम्परिक खेल माना जाता है। उनका मानना है कि पतंगों के उड़ाने से सुख-समृद्धि बरसती है। इसी प्रकार पंजाब में इस दिन होलिका की छोटी सी मिट्टी की मूर्ति तैयार करके उसके साथ छोटी-छोटी टहनियाँ इकट्ठी करके रख दी जाती हैं जो कि होली के पहले दिन होलिका दहन के रूप में जलाई जाती हैं। इस दिन मक्की की रोटी, सरसों का साग और मीठे चावल आदि व्यंजन बनाए जाते हैं।

हिमाचल प्रदेश में बसंत पंचमी का शास्त्रीय संगीत एवं लोकतात्विक रूप

हिमाचल प्रदेश में बसंत पंचमी का दिन या त्यौहार बहुत ही श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यहाँ के इतिहास पर दृश्टि डालें तो यहाँ पर किसी भी विशय पर जानकारी मौखिक रूप से ही उपलब्ध होती है और यह जानकारी हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी ही प्राप्त कर पाते हैं। इसी प्रकार कई स्थानों पर बसंत पंचमी के विषय में भी हमें अपने वृद्धजनों से जानकारी प्राप्त होती है। इन्हीं वृद्धजनों के अनुसार हिमाचल के निचले क्षेत्रों में जहाँ राजाओं का शासन हुआ करता था वहाँ बसंत पंचमी के दिन को उत्सव की तरह मनाया जाता था। जिनमें से धामी रियासत के वृद्ध जन बताते हैं कि बसंत पंचमी के दिन राजा के नाई जो कि बाल काटने का कार्य किया करते थे उस दिन सरसों के फूल और ध्रुवा घास जिसे कि स्थानीय भाशा में 'जूब' कह कर भी पुकारा जाता है, का एक छोटा सा पुन्ज बना कर लाते थे, जिसे मौली के धागे से बाँधा जाता था। ध्रुवा और सरसों के फूल इन दोनों से बना एक छोटा सा पुन्ज राजा को भेंट किया जाता था। इस पुन्ज को राजा अपने कान में फंसा कर रखते थे। इसके अतिरिक्त यह पुन्ज रियासत के अन्य गणमान्य लोगों को भी भेट किया जाता था जिसे वे कान के ऊपर लगा कर रखते थे। इसी दिन राजा के महल में सरस्वती पूजन किया जाता था। राजा को गुलाल लगाया जाता था और फिर मंगलामुखी जाति के लोग बसंत-बहार राग में ध्रुपद-धमार, होरी और अन्य शास्त्रीय बंदिषें गाया करते थे। एक हर्ष-उल्लास का वातावरण पूरा दिन राजा के महल में रहता था। इस दिन लोगों के घरों में पीली खिचड़ी, पीला हलवा बना कर पूजा की जाती थी और फिर उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता था। राजाओं के राज के साथ यह प्रथा भी समाप्त हो गई है। आज उस तरह का उत्सव तो नहीं होता लेकिन संगीत कलाकारों और कुछ साधारण परिवारों में आज सरस्वती पूजन के साथ-साथ वाद्यों का पूजन भी किया जाता है और पीले व्यंजनों को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है।

इसी प्रकार हिमाचल के कुल्लू क्षेत्र में भी बसंत पंचमी का उत्सव बहुत ही श्रद्धा और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन से यहाँ होली पर्व का आरम्भ हो जाता है जो कि 40 दिन तक चलता है। इस दिन यहाँ पर भगवान रघूनाथ की यात्रा निकाली जाती है। ये उत्सव बसंत पंचमी पर आरम्भ होता है और होली पर्व पर समाप्त होता है। रघूनाथ जी को रथ पर सवार हो कर अस्थाई षिविर तक लाया जाता है। यह रथ रस्सियों से खींच कर शिविर तक लाया जाता है। इस अवसर पर एक व्यक्ति हनुमान के रूप को धारण किए हुए होता है जो कि इस यात्रा में सभी लोगों पर गुलाल फेंकता जाता है। अस्थाई षिविर में पहुँच कर भगवान रघूनाथ जी की पूजा की जाती है और फिर वहाँ भरत-मिलाप किया जाता है। इसके पष्चात् रघूनाथ जी का रथ वापिस उनके स्थाई निवास रघूनाथपुरी ले जाया जाता है। इसके पष्चात् एक विषेश समुदाय जिसे 'वैरागी समुदाय' कहा जाता है के द्वारा प्रतिदिन रघूनाथ जी के मन्दिर में उनकी पूजा-अर्चना की जाती है और उन्हें गुलाल लगाया जाता है। तत्तपष्चात् यह समुदाय घर-घर जाकर लोगों को रंग लगाते हैं और साथ ही विषेश प्रकार के होरी गीत भी गाते हैं। ये गीत ऐसे होते हैं जिन्हें इस विषेश समुदाय के अतिरिक्त कोई और नहीं गा सकता, ऐसा कहा जाता है।

इस क्षेत्र में बसंत पंचमी पर षुरू हुए इस त्यौहार को वर्ष का प्रथम त्यौहार माना जाता है और यह त्यौहार 40 दिनों तक चलता है। कहा जाता है कि इस त्यौहार की परम्परा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। यहाँ के लोगों में यह मान्यता है कि यदि भगवान रघूनाथ के रथ की रस्सियों को छू लिया जाए तो वह शुभ माना जाता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति गुलाल फेंकता है यदि वह गुलाल किसी के लग जाए तो वह भी शुभ माना जाता है। अतः लोग रथ की रस्सी को छूने और गुलाल लगाने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

बसंत पंचमी पर यह रथ यात्रा पूरे हर्षोल्लास तथा पारम्परिक वाद्यों के साथ निकाली जाती है। इस अवसर पर आजकल कीर्तन-भजन गाकर भी लोग ईष्वर को याद करते हैं। इस दिन पर हिमाचल के इन दोनों क्षेत्रों षिमला और कुल्लू में विषेश प्रकार के गीत भी गाए जाते हैं।

बसंत पंचमी पर तथा बसंत ऋतु के आगमन पर और भी बहुत से उत्सव हिमाचल प्रदेश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में आरम्भ होते हैं। जिनमें फागली नामक उत्सव जो कि लाहौल-स्पिति, मलाणा आदि क्षेत्रों में मनाया जाता है। यह उत्सव यहाँ के लोगों का एक लोकप्रिय उत्सव है।

इस प्रकार हिमाचल के लगभग सभी क्षेत्रों में बसंत पंचमी का दिन बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। कलाकार लोग इस दिन सरस्वती पूजा करते हैं और अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें गायन, वादन और नृत्य विधाओं को दर्षाया जाता है। इस दिन हर घर में पूजा-अर्चना के साथ-साथ कई तरह के पकवान तैयार करके उनका प्रसाद ग्रहण किया जाता है।

निष्कर्ष

बसंत पंचमी हर्षोल्लास, नवीनता, खुशहाली और विभिन्न रंगों का एक पावन पर्व है। यह विद्या की देवी के पूजन और विद्या ग्रहण करने का एक पावन दिन है। साथ ही इससे यह निश्कर्श भी निकलता है कि हिमाचल प्रदेश में किस प्रकार सदियों से यह त्यौहार मनाया जाता रहा है और आज इस दिन का क्या रूप हमारे सामने है अर्थात् प्राचीन रूप से आज के रूप में आने पर इस उत्सव में कितना परिवर्तन आ गया है। साथ ही यह भी जानकारी मिलती है कि इस त्यौहार के साथ हमारी क्या-क्या मान्यताएं जुड़ी हैं और उनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा किस प्रकार का संगीत इस पर्व से जुड़ा है।

संदर्भ:

साक्षात्कार

श्री तीखू राम, गाँव धामी, तहसील धामी, ज़िला शिमला हिमाचल प्रदेश।
श्री हरिदास, गाँव धामी, तहसील धामी, ज़िला शिमला हिमाचल प्रदेश।
कमल किशेंर शर्मा, सुल्तानपुर (रघुनाथपुर) कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।
प्यारे लाल भिमू, ढालपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।